Amolakchand Mahavidyalaya, Yavatmal.

A REPORT
On
Seminar on National Education Policy-2020

One-day seminar on the National Education Policy-2020 was organized on 24th April 2022. The event, organized by the Internal Quality Assurance Cell, aimed to delve into the various facets of the National Education-2020.

The resource persons, Dr. Pravin Raghuvanshi, Professor in Chemistry, Shri. Brijlal Biyani College, Amravati and Dr. Mahendra Mete, Librarian, Shri Shivaji Science College, Amravati offered valuable insights into the National Education Policy-2020, addressing both its merits and identified loopholes. The discussions covered diverse aspects, providing a comprehensive understanding of the policy's implications on the education landscape as, key provisions and implications of the National Education Policy-2020, potential drawbacks and areas needing refinement within the policy framework, and its impact on educational institutes.

The seminar witnessed active participation from faculties of Amolakchand Mahavidyalaya and other institutions within the district. A total of 300 participants engaged in the dialogue, fostering an enriching exchange of ideas and perspectives.

Dr. R. A. Mishra, Principal of Amolakchand Mahavidyalaya, was the organizer, and Prof. D. S. Chavhan, IQAC Co-ordinator, served as the Convener.

The seminar on the National Education Policy 2020 facilitated a robust exchange of ideas, fostering a deeper understanding of the policy's nuances. The active participation of 300 attendees, including educators from various institutions, exemplifies the significance of such events in shaping informed perspectives on crucial educational reforms.

स्वदेश, दि. २७/४/२०२२ ४

नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणाचे यश हे योग्य अंमलबजावणी वरच : डॉ. प्रवीण रघुवंशी

अमोलकचंद महाविद्यालय येथे आयोजित परिसंवादात उपस्थित असलेले मान्यवर कार्यक्रमाचे अध्यक्ष प्राचार्य डॉ. राममनोहर मिश्रा, डॉ. प्रवीण रघुवंशी, डॉ. मेटे, प्रा.डॉ. डी.एस. चव्हाण आणि प्रा. जाधव.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की चुनौतियों को समझें : रघुवंशी

• चर्चासत्र में छात्र, प्राध्यापक व व्यवस्थापन से किया आह्वान

संवाददाता | यवतमाल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर अमल करने के लिए चुनौतियां, छात्र अध्यापक और व्यवस्थापन आदि समझकर लें अन्यथा शिक्षा क्षेत्र में डिफ्लेक्स होगा, ऐसे विचार नुटा के अध्यक्ष डा. प्रवीण रघुवंशी ने व्यक्त किए। वह स्थानीय अमोलकचंद महाविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर चर्चा में बोल रहे थे। समारोह की अध्यक्षता प्राचार्य रामम्नोहर मिश्रा ने की। डा.रघुवंशी ने कहा कि देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने देश में आईआईटी जैसी संस्थाएं स्थापित कर देश के लिए जरूरी शिक्षा नीति कार्यान्वित की थी। बाद में डा. राधाकृष्णन ने आजादी के बाद उच्च शिक्षा नीति तय की। जिससे देश को एक दिशा मिली। कोठारी आयोग ने जीडीपी के 6 फीसदी राशि शिक्षा पर खर्च करने की सलाह दी। यही नहीं त्रिभाषा नीति स्वीकार कर शिक्षा प्रादेशिक भाषा से देने का आग्रह किया। 1986 में नई शिक्षा नीति में देहात के मेधावी छात्रों के लिए नवोदय विद्यालय शुरू किए। ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड, विद्यार्थी केंद्रित योजनाएं शुरू की। 1992 में उसमें सुधार कर देश के हर शिक्षा नीति और शिक्षा जीडीपी पर 6 फीसदी खर्च की शिफारिस की गई। मगर एक भी सरकार ने इतना खर्च शिक्षा पर नहीं किया। डा.रघुवंशी ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी के काल में वैदिक शिक्षा देने वाले संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित हुए, फलज्योतिष जैसे विषय पाठ्यक्रम में आए। 2002 को बिरला-अंबानी समिति ने उच्चशिक्षा का पूरा निजीकरण करने की शिफारस की। नई शिक्षा नीति,छात्र, प्राध्यापक, व्यवस्थापन के सामने चुनौती है। डा. मिश्रा ने नई शिक्षा नीति का जायजा लिया। इस अवसर पर डा. रघुवंशी का महाराष्ट्र प्राध्यापक महासंघ के महासचिव पद पर चयन होने पर उनका सत्कार किया गया। संचालन प्रा. किशोर बुटले, प्रास्ताविक डा. डी एस चव्हाण और आभार डा. आर बी भांडवलकर ने माना।

3 हजार से कम विद्यार्थियों वाले महाविद्यालय होंगे बंद :

2030 तक हर महाविद्यालय का संलग्नीकरण खत्म कर उन्हें सहायता देने की शिफारिस राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने की है। 3 हजार से ज्यादा छात्र वाले महाविद्यालय बंद कर अन्य शिक्षा संस्थाओं में उन्हें शामिल किया जाएगा। जिससे व्यवस्थापन के सामने बड़ी समस्या निर्माण हो सकती है। हजारों छात्रों के बाहर जाने से विद्यार्थी उच्च शिक्षा से वंचित रह सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा से अध्यापकों की नौकरी खतरे में :

ऑनलाइन शिक्षा तरीका, क्रेडिट डिस्टेन से अध्यापकों के पद बड़े पैमाने पर घटने वाले हैं। जिससे अध्यापकों के सामने भी बड़ी चुनौती निर्माण होगी। बैंक घोटाली से अर्थव्यवस्था खतरे में आई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लिए 2 वर्ष से बजट में कोई प्रावधान नहीं :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति केंद्र सरकार ने स्वीकार करने के 2 वर्ष पूरे होने के बावजूद कहीं पर भी बजट में प्रावधान नहीं किया गया। जिससे शिक्षा नीति पर सवालिया निशान लग गए है। जब बजट ही नहीं तो उस पर काम कैसे शुरू होगा ऐसा सवाल पूछा जा रहा है। लॉकडॉउन नीति में सुझाए गए नियामक मंडल भी स्थापित नहीं हो पाए हैं।

नई पेंशन नीति षड़यंत्र :

नई पेंशन नीति पर बोलते समय डा.महेंद्र मेटे ने शिक्षा व्यवस्था और अध्यापकों को आने वाली दिक्कतों के बारे में विचार रखे। नई पेंशन योजना अध्यापक और कर्मचारियों की सुरक्षा छीनने वाली होने का आरोप लगाया। इस समय पेंशन को संविधान या कानून का आधार होने की बात बताई। नई पेंशन योजना एक षड़यंत्र होने का आरोप भी किया।

अंमलबजावणी अभावी नवीन शिक्षण धोरण विध्वंस घडविणारे - डॉ प्रवीण रघुवंशी

बँक घोटाळ्यामुळे अर्थव्यवस्था धोक्यात-डॉ महेंद्र मेटे, अमोलकचंद महाविद्यालयात आयोजित चर्चासत्रात सूर

वाशिम संदेश, यवतमाळ

राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण अमलबजावणी समोरील आव्हाने विद्यार्थी, शिक्षक, व्यवस्थापनाने समजून घ्यावी,अन्यथा शिक्षण क्षेत्रात विध्वंस घडेल, असे प्रतिपादन नुटाचे अध्यक्ष डॉ.प्रवीण रघुवंशी यांनी केले. स्थानिक अमोलकचंद महाविद्यालय 'राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण 2020' या विषयावर आयोजित चर्चासत्रात ते बोलत होते. प्राचार्य डॉ राममनोहर मिश्रा यांच्या अध्यक्षतेत झालेल्या या चर्चासत्रात बोलताना डॉ. रघुवंशी म्हणाले की, देशाचे प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल यांनी देशात आय.आय. टी सारख्या संस्था स्थापन करून देशाला अभिप्रेत असलेले शैक्षणिक धोरण राबविले. डॉ. राधाकृष्णन यांनी स्वातंत्र्य नंतर उच्च शिक्षणाचे धोरण ठरविले व देशाला एक दिशा दिली.कोठारी आयोगाने 6 टक्के खर्च शिक्षणावर व्हावा असे सुचविले व त्री भाषा धोरण स्वीकारून शिक्षण प्रादेशिक भाषेतून देण्याचा आग्रह धरला. राजीव गांधी यांनी 1986 साली नवीन शैक्षणिक धोरण आणले व ग्रामीण भागातील गुणवंत विद्यार्थ्यांसाठी नवोदय विद्यालये सुरू केलीत. ऑपरेशन ब्लॅकबोर्ड , विद्यार्थी केंद्रित योजना सुरू केल्या. त्याला 1992 मध्ये सुधारणा सुचविण्यात आल्या. देशातील प्रत्येक शैक्षणिक धोरण शिक्षणावर 6 टक्के खर्चाची शिफारस करते परंतु एकाही सरकारने शिक्षणावर अपेक्षित खर्च केला नाही. अटलबिहारी वाजपेयी यांच्या काळात वैदिक शिक्षण देणारी संस्कृत विद्यापीठे स्थापन झाली व फलज्योतिष सारखे विषय अभ्यासक्रमात आले.2002 साली बिर्ला अंबानी समितीने उच्च शिक्षणाची संपूर्ण खाजगीकरण करण्याची शिफारस केली, असा भारतीय शिक्षणाचा धोरणाचा आदावा घेऊन डॉ.प्रवीण रघुवंशी यांनी नवीन शैक्षणिक धोरणामुळे विद्यार्थी,प्राध्यापक व व्यवस्थापन यांचे समोर येणाऱ्या आव्हानाची चर्चा केली. सन 2030 पर्यंत प्रत्येक महाविद्यालयाचे सलांग्निकरण संपुष्टात आणून त्यांना स्वायत्तता देण्याची शिफारस राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणाने केली असून 3000 विद्यार्थी संख्या पेक्षा कमी असलेली महाविद्यालय बंद होवून इतर शिक्षण संस्था मध्ये त्यांचे विलीन होईल. त्यामुळे व्यवस्थापनासमोर मोठी समस्या निर्माण होवू शकते. मल्टिपल एक्झीटमुळे बरेच विद्यार्थी उच्च शिक्षणापासून वंचित राहतील. ऑनलाईन शिक्षण पद्धत, क्रेडिट सिस्टीम यामुळे शिक्षकांची पदे प्रचंड प्रमाणात घटतील व त्यामुळे शिक्षकांसमोर मोठे आव्हान निर्माण होईल, बँक घोटाळ्यामुळे अर्थव्यवस्था धोक्यात आली आहे असे मत त्यांनी व्यक्त केले. राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण केंद्र सरकारने स्वीकारल्यापासून दोन वर्ष झाली परंतु कुठलीही अंदाजपत्रकीय तरतुद झाली नसल्याने धोरणावर प्रश्नचिन्ह निर्माण होते.तसेच शैक्षणिक धोरणामध्ये सुचविलेले नियामक मंडळ सुद्धा स्थापन झाले नसल्याचे त्यांनी सांगितले. तर नवीन पेन्शन धोरणावर बोलताना डॉ महेंद्र मेटे यांनी शिक्षण व्यवस्था व शिक्षकांना येणाऱ्या अडचणींबाबत महत्वपूर्ण प्रतिपादन केले, नवीन पेन्शन योजना शिक्षक व कर्मचारी यांची सुरक्षा संपविणारा असल्याचे म्हटले, त्यांनी पेन्शन ला संविधान व कायद्याचा आधार असल्याचे सांगितले, गॉडस शब्द वापरून शोषण केले जात असून हे षडयंत्र समजून घ्यायला हवे, असे ते म्हणाले चर्चासत्राचे अध्यक्ष डॉ मिश्रा यांनी नवीन शिक्षण धोरणाचा सविस्तर आढावा घेतला महाराष्ट्र प्राध्यापक महासंघाच्या महासचिव पदी निवड झाल्याबद्दल डॉ.प्रवीण रघुवंशी यांचा सत्कार करण्यात आला,कार्यक्रमाचे संयोजन महाविद्यालयाचे यांनी केले. कार्यक्रमाचे संचालन प्रा किशोर बुटले, प्रस्ताविक डॉ. डी एस चव्हाण , व आभार प्रदर्शन डॉ आर बी भांडवलकर यांनी केले.

Vidya Prasarak Mandal's

AMOLAKCHAND MAHAVIDYALAYA, YAVATMAL

One Day Seminar on

National Education Policy 2020

Certificate

This is to certify th. Mrs./Dr. Madhuri W. Bhade

of Amolakchand Mahavidyalaya, Yavatmal has participated in One Day Seminar on " National Education Policy 2020" conducted on 24 April 2022.

Prof. D. S. Chavhan
Convener & IQAC Co-ordinator,
Amolakchand Mahavidyalaya, Yavatmal

Dr. R. A. Mishra
Chairperson & Principal,
Amolakchand Mahavidyalaya, Yavatmal